जिंदगी में हर चीज की कोई ना कोई वजह होती है।
– अज्ञात

आतंकवाद की आड़ में इस्लाम को निशाना

साफ है कि यह महज कुछ आम लोगों के भावावेश में आ जाने का मामला नहीं है। यह विभिन्न देशों के बीच बन रहे नए तरह के शक्ति संतुलन का संकेत है। जब से तुर्की ने इस्लामी दुनिया का नेतृत्व सऊदी अरब से छीन कर अपने हाथों में लेने का मन बनाया है।

आरती सिंह।।

फ्रांस पिछले कुछ सालों से इस्लामी आतंकवादी तत्वों के निशाने पर है। क्लास में कथित तौर पर पैगंबर मोहम्मद का कार्टून दिखाने की वजह से एक स्टूडेंट द्वारा टीचर की हत्या किए जाने के कुछ ही समय बाद जिस तरह से चर्च में घुसकर एक बुजुर्ग महिला समेत तीन लोगों की चाकुओं से गोदकर हत्या की गई, वह पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय होना चाहिए। लेकिन इन दोनों घटनाओं के बाद भी जहां फ्रांस ने आतंकी तत्वों का मुकाबला करने और अपने उदार जीवन मूल्यों की हर हाल में रक्षा करने का संकल्प जताया, वहीं दुनिया के कुछ अन्य हिस्सों में फ्रांस के प्रति सहानुभूति के बजाय धार्मिक भावनाओं के आधार पर विभाजन दिखाई देने लगा। खासकर एशिया के मुस्लिम बहुल इलाकों में फ्रांस के खिलाफ प्रदर्शन हुए जिनमें फ्रांसीसी राष्ट्रपति के खिलाफ गुस्सा प्रकट किया गया। इस्लाम से जुड़े मसलों पर दुनिया भर में प्रदर्शन पहले भी होते रहे हैं, इस बार खास बात यह है कि इन कट्टर धार्मिक भावनाओं को कुछ राष्ट्राध्यक्षों और राजनेताओं का स्पष्ट समर्थन प्राप्त हुआ।

घृणित और निर्मम हत्याओं के संदर्भ में भी तुर्की और पाकिस्तान के शासनाध्यक्षों ने फ्रांसीसी राष्ट्रपति के बयान को ज्यादा महत्वपूर्ण मुद्दा बताया है। हालांकि फ्रांस ने आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई जारी रखने की बात कही, लेकिन उसकी व्याख्या इस रूप में की जा रही है कि वह आतंकवाद की आड़ में इस्लाम को निशाना बना रहा है। इसी व्याख्या के सहारे मलयेशिया के पूर्व प्रधानमंत्री महाथिर मोहम्मद ने यहां तक कह दिया कि मुसलमानों को यह अधिकार है कि वे फ्रांसीसियों को दंडित करें, उनकी हत्या करें। साफ है कि यह महज कुछ आम लोगों के भावावेश में आ जाने का मामला नहीं है। यह विभिन्न देशों के बीच बन रहे नए तरह के शक्ति संतुलन का संकेत है। जब से तुर्की ने इस्लामी दुनिया का नेतृत्व सऊदी अरब से छीन कर अपने हाथों में लेने का मन बनाया है, तभी से इस्लाम से जुड़े मसलों में उसकी प्रो–एक्टिव भूमिका दिखने लगी है। उसी भूमिका का एक रूप कश्मीर मामले में उसके अटपटे बयान भी हैं। ऐसे बयानों से तुर्की को अंततः कितना फायदा होगा और उसका कद बढ़ेगा या और घट जाएगा, यह अलग सवाल है।

फिलहाल गौर करने की बात यह है कि पहली बार इस्लामी आतंकवाद को किसी देश और राष्ट्राध्यक्ष का समर्थन मिलता दिख रहा है। अपने चरम उत्कर्ष के दौर में भी आतंकवाद नॉन स्टेट एक्टर्स के ही हाथों में रहा। कुछ देशों पर इसे समर्थन देने या इसके खिलाफ प्रभावी कदम न उठाने के आरोप भले लगते रहे हों, कोई राष्ट्राध्यक्ष खुलकर इनके पक्ष में नहीं आया था। अगर इस बार ऐसा होता दिख रहा है तो इन देशों की विवेकशील आवाजों को आगे आकर इन्हें संयत रखने का प्रयास करना चाहिए। वरना क्या पता, अपनी मौत मरने के लिए छोड़ दिए गए आतंकवाद का एक और दौर दुनिया को झेलना पड़ जाए।

उत्तर कांड

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

कदाचित ये वही समय रहा होगा जब बौद्ध धर्म के लोगों ने गौतम बुद्ध को भगवान विष्णु के अवतार के रूप में प्रसारित करना आरम्भ कर दिया। इस विषय पर एक विस्तृत लेख पहले ही प्रकाशित हो चुका है जिसे आप यहाँ पढ़ सकते हैं। कई लोगों का मानना है कि गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में उत्तर कांड को लव–कुश कांड के रूप में जोड़ा है तो कई विद्वान ऐसा मानते हैं कि तुलसीदास ने भी अपने ग्रन्थ में ६ कांड ही लिखे थे किन्तु बाद में उससे भी छेड़–छाड़ की गयी। उसी समय उत्तर रामायण को उत्तर कांड का नाम देकर रामायण और रामचरितमानस में ही जोड़ दिया गया। यहाँ तक भी ठीक था क्योंकि उत्तर रामायण में ऐसा कुछ भी नही जो आपत्तिजनक हो।

संपादकीय

कृषि–भूमि की व्यवस्था

सबसे निर्धन गांववासियों की खाद्य सुरक्षा और पूरे देश की खाद्य सुरक्षा की दिशा में बहुत महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल हो सकेगी। सरकार की भूमिका मुख्य रूप से उन सभी किसान परिवारों को सहायता देने की होनी चाहिए जो पर्यावरण आधारित खेती अपनाते हैं। सरकार इन सभी परिवारों को एक निश्चित राशि की मदद दे सकती है और प्रतिकूल मौसम वाले साल में इसे बढ़ाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त इन किसानों की उपज की एक निश्चित मात्रा वह न्यूनतम समर्थन मूल्य के आधार पर स्थानीय पोषण कार्यक्रम और सार्वजनिक वितरण प्रणाली के लिए खरीद सकती है। फसलदृचक्र, मिश्रित खेती, पशुपालन और कृषि के मिलन, स्थानीय अवशेषों से खाद निर्माण ऐसे तरीके हैं जो स्थानीय पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बगैर खेती को लाभदायक बनाने में मदद करते हैं। ऐसे ही प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा हानिकारक कीड़ों और जंतुओं को दूर करने का इंतजाम किया जाता है। इसमें मेहनत, समझ और रचनात्मकता अधिक है पर खर्च कम है। इस तरह एग्रो इकॉलजी छोटे किसानों और महिलाओं के अधिक अनुकूल है और स्कूली बच्चों को इससे विज्ञान की बहुत अच्छी शिक्षा गांव स्तर पर ही मिल सकती है। यह सोच छोटे किसानों के बहुत अनुकूल है। यदि भूमिहीनों को थोड़ी सी भूमि भी मिलेगी तो वे इस तरह की खेती से अपनी खाद्यदृसुरक्षा के लिए बहुत अच्छे परिणाम प्राप्त कर सकते हैं। इस तरह किसानों का संकट दूर करने, पर्यावरण की रक्षा करने, खाद्यों की गुणवत्ता सुधारने और स्वास्थ्य बेहतर करने जैसे सभी उद्देश्य एक साथ प्राप्त हो सकेंगे।

कई किसान संगठनों को लग रहा है कि हाल में बने तीन नए कृषि कानूनों से उन्हें प्राप्त होने वाले उपज मूल्य और उनकी आय में कमी आ सकती है। इस कारण वे इनका विरोध कर रहे हैं।

किसानों की भूमिका

भारत डोगरा।।

देश में जब भी खेती–किसानी पर बहस होती है तो बातचीत प्रायरू किसानों की आर्थिक स्थिति के इर्दगिर्द ही सिमटी रह जाती है। कई किसान संगठनों को लग रहा है कि हाल में बने तीन नए कृषि कानूनों से उन्हें प्राप्त होने वाले उपज मूल्य और उनकी आय में कमी आ सकती है। इस कारण वे इनका विरोध कर रहे हैं। अनेक अन्य प्रमुख देशों की तुलना में भारत में कृषि और किसानों की भूमिका कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है। प्रमुख अनाजों गेंहू और चावल में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने, कठिन वक्त के लिए अनाजों का पर्याप्त भंडार उपलब्ध करवाने और अर्थव्यवस्था में मंदी के समय में भी सामान्य कृषि उत्पादन बनाए रखने में किसानों और खेत–मजदूरों की मेहनत का बड़ा योगदान रहा है। इससे हमारी अर्थव्यवस्था, आत्मनिर्भरता और खाद्य सुरक्षा को बहुत बल मिला है।

इन उपलब्धियों के बीच भी मौजूदा कृषि और खाद्य व्यवस्था की कमियों के बारे में बहुत कुछ कहा जाता रहा है। किसानों का संकट भी गंभीर चिंता का विषय बनता रहा है। खासकर उन पर बढ़ता कर्ज का बोझ चर्चा में रहा है। इसलिए मुद्दा यह नहीं है कि मौजूदा कृषि और खाद्य व्यवस्था में बदलाव या सुधार नहीं होने चाहिए।

सुधारों की मांग तो किसान संगठन स्वयं करते रहे हैं। लेकिन उनका मानना है कि जो बदलाव हाल के तीन कानूनों से लाए गए हैं वे सही दिशा में नहीं हैं। ये उन्हें राहत देने के स्थान पर उनकी स्थिति को और कमजोर कर सकते हैं। अनेक विशेषज्ञों और विपक्षी दलों ने भी उनकी इस समझ को अपना समर्थन दिया है और इस आधार पर इस विरोध ने तेजी से जोर पकड़ा है। अब आगे सवाल यह है कि किस तरह के बदलाव और सुधार वास्तव में जरूरी हैं।

विश्व स्तर पर देखें तो हाल के समय में मौजूदा कृषि तकनीकों से जुड़े पर्यावरण विनाश पर चिंता बढ़ गई है। रासायनिक खाद और कीटनाशक रसायनों से मिट्टी के उपजाऊपन पर प्रतिकूल असर पड़ा है। किसान के मित्र सूक्ष्म जीव, केंचुए आदि तेजी से कम हुए हैं और खाद्य चक्र में विषैलापन बढ़ा है। शीर्ष वैज्ञानिकों के अनुसार नाइट्रोजन और फासफोरस का चक्र खतरनाक हदों के बाहर जा रहा है। इसके अतिरिक्त भूजल तेजी से नीचे गया है और गांवों के जलदृस्रोत प्रदूषित हुए हैं। अनुचित किस्म के मशीनीकरण और अनुचित फसल चक्रों के कारण प्रदूषण की समस्या कई स्तरों पर बढ़ी है। जलवायु बदलाव के संकट में कृषि कार्यों का योगदान बढ़ा है। इस समस्या की गंभीरता को समझते हुए कई कृषि विद्वान ऐसे सुधारों की मांग कर रहे हैं जिनसे पर्यावरण रक्षा और किसानों के आर्थिक संकट को दूर करने के उद्देश्य एक साथ प्राप्त किए जा सकें। अनेक स्थानों पर प्रयोगों से इसके उत्साहवर्धक परिणाम प्राप्त हुए हैं। किसानों के अनावश्यक खर्चों को कम किया गया और साथ में पर्यावरण रक्षा के उद्देश्य प्राप्त किए गए। उदाहरण के लिए क्यूबा में वर्ष 1988 की तुलना में वर्ष 2007 में सब्जियों का उत्पादन 145 प्रतिशत रहा जबकि कृषि रसायनों की खपत में 72 प्रतिशत कमी लाई जा सकी। जरूरी बात है कि यदि खर्च भी कम होगा और उत्पादन भी बढ़ेगा तो किसान की आर्थिक स्थिति सुधरेगी।

सूडोकु नवताल-5522

सरल

3				8				9
		8	6		9	5		
6	5			4			7	1
	4						2	
1	2			6			9	8
		6	4		5	8		
9				1				7

Jagrutidaur.com, Bangalore

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
■ प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
■ पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5521 का हल

8	2	4	3	9	7	5	1	6
3	5	6	1	4	2	7	8	9
1	9	7	6	5	8	2	3	4
9	6	2	5	8	3	1	4	7
5	3	1	4	7	9	8	6	2
4	7	8	2	1	6	9	5	3
2	8	3	9	6	1	4	7	5
6	1	5	7	2	4	3	9	8
7	4	9	8	3	5	6	2	1

अपना ब्लॉग

तो पर्यावरण में सुधार होगा

मोहन। यदि रासायनिक खाद और कीट खर–पतवार नाशकों का उपयोग कम हो रहा है तो पर्यावरण में सुधार होगा और भूमि का प्राकृतिक उपजाऊपन बढ़ेगा। इस तरह टिकाऊ विकास यानी सस्टेनेबल डिवेलपमेंट की बुनियाद मजबूत होगी। इस तरह के विकास के लिए एग्रो इकॉलजी की सोच सबसे सहायक होगी। इस सोच के अंतर्गत किसी भी स्थान की प्राकृतिक प्रक्रियाओं की बहुत रचनात्मक व गहन समझ बनाई जाती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि किन प्राकृतिक प्रक्रियाओं से हरियाली बढ़ती है, मिट्टी को सहज ढंग से पोषण प्राप्त होता है और एक प्रक्रिया के अवशेष दूसरी प्रक्रिया के सहायक बनते हैं। इस समझ के आधार पर कृषि का विकास इस तरह होता है कि इससे प्राकृतिक प्रक्रियाओं में विघ्न न पड़े, अपितु इसके लिए बेहतर अवसर उत्पन्न किए जाएं।